B-4

L-26

कांग्रेस की स्थापना से संबंधित विवाद

· दो प्रकार के दृष्टिकोण प्रचलित हैं -

(i) सरकारी षड्यंत्र या सुरक्षा वाल्व सिद्धांत

(ii) भारतीयों की जागरूकता का परिणाम।

सरकारी षड्यंत्र या सुरक्षा वाल्व सिद्धांत :-

• सरकार ने जानबूझ कर कांग्रेस की स्थापना में सहयोग दिया जिससे भारतीयों में संचित आक्रोश को समय-समय पर निकलने का मंच बन सके और 1857 जैसी परिस्थितियाँ निर्मित न हो।

पक्ष में तर्क

• इस सिद्धांत के सन्दर्भ मे मुख्यतः दो उदाहरण लिए जाते हैं प्रथम डब्लू. सी. बनर्जी के द्वारा इसे वायसराय डफरिन के देन के रूप में उल्लेख करना तथा दूसरा वेडरबर्न के द्वारा लिखित ह्यूम की की जीवनी में इस सिद्धांत का उल्लेख मिलना।

विवाद क्यों हुआ?

· समय-समय पर राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान विभिन्न राष्ट्रीय नेताओं ने कांग्रेस की आलोचना करने के लिए इस सिद्धांत का उपयोग किया जैसे लाजपत राय ने नरमदलीय कांग्रेस की आलोचना के लिए, आर.पी. दत्त नामक मार्क्सवादी विद्वान ने कांग्रेस की मध्यवर्गीय चरित्र की आलोचना के लिए

और RSS के गोलवरकर ने हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा को कमजोर करने के लिए इस सिद्धांत का उपयोग किया।

खण्डन :- • आधुनिक अनुसंधान में इस सिद्धांत को महत्व नही दिया जाता है विभिन्न आधारो पर इसकी आलोचना की जाती है जैसे - ह्यूम की जीवनी मे साधु संतो से प्राप्त जानकारी के आधार पर ब्रिटिश सरकार पर खतरे की बात की गई है न कि किसी सरकारी रिपोर्ट या इंटेलिजेंस रिपोर्ट के आधार पर।

• डफरिन ने ह्यूम को यह सुझाव दिया था कि कांग्रेस को सामाजिक मुद्दो तक सीमित रखिए लेकिन पहली बैठक से ही कांग्रेस ने राजनीतिक आर्थिक मुद्दों पर बल दिया।

• तीसरी-चौथी बैठक से कांग्रेस की आलोचना डफरिन ने प्रारम्भ की।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

भारतीयों की जागरूकता का परिणाम

- अधिकांशतः राष्ट्रवादियों का मानना है कि कांग्रेस की स्थापना 19वीं सदी में भारतीयों में जागरूकता के कारण हुई।
- शिक्षा का प्रसार एवं आधुनिक विचारों का भी प्रसार हुआ, इसका प्रभाव सामाजिक-धार्मिक राजनीतिक संस्थाओं एवं सुधार आन्दोलनों पर पड़ा।
- सरकार के द्वारा सुधारों के लिए अपेक्षित कदम नहीं उठाए गए, शिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढ़ी और सरकार के प्रति आक्रोश भी बढ़ा।
- 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में राजनीतिक संस्थाओं के द्वारा क्षेत्रीयता की सीमा को तोड़ने की कोशिश की गई, भारतीय भाषाओं के अखबारों एवं किताबों ने लोगों को अंग्रेजों के विरुद्ध जागरूक करना प्रारम्भ किया।
- इसी पृष्ठभूमि में 1870 के दशक में लिटन की नीतियों और 1880 के दशक में इल्बर्ट बिल के मुद्दे पर अखिल भारतीय प्रतिक्रिया दिखी (शिक्षित भारतीयों में) और दिसम्बर 1885 में उपरोक्त गतिविधियों के स्वभाविक परिणाम के रूप में कांग्रेस की स्थापना हुई।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

गरमपंथ या उग्र राष्ट्रवाद - 1905-1919

(i) उदय के कारण

(ii) 1905-07 - बंगाल विभाजन
- स्वदेशी आन्दोलन
- 1907 - कांग्रेस का विभाजन

(iii) 1907-1915 - क्रान्तिकारी राष्ट्रवाद - प्रथम चरण

(iv) 1915-1919 - की घटनाएँ
(a) होमरूल आन्दोलन
लखनऊ सेशन
लखनऊ पैक्ट
(b) गाँधी जी
साउथ अफ्रीका
चम्पारण खेड़ा अहमदाबाद

कारण :- सरकार से निराशा-

19 सदी के अंत तक आते-आते विभिन्न कारणों से सरकार के विरुद्ध आक्रोश बढ़ता गया जैसे-

1- नरमपंथी नेतृत्व के द्वारा पारित राजनीतिक प्रस्तावों की सरकार के द्वारा निरंतर उपेक्षा की गई।

2- एक तरफ सरकार न केवल राष्ट्रीय मांगों की उपेक्षा कर रही थी बल्कि जो अधिकार दिए गए थे उसे भी हीन रही थी जैसे कर्जन के काल में कलकत्ता नगर निगम पर सरकारी नियंत्रण बढ़ाया गया तथा कलकत्ता

विश्वविद्यालय और प्रेस पर भी सरकारी नियंत्रण को कठोर किया गया।

3- 1890 के दशक में अकाल एवं प्लेग के कारण लोगों की कठिनाईयां बढ़ी और अपेक्षा के अनुरूप सरकार ने राहत कार्यों को महत्व नहीं दिया, राहत कार्यों के दौरान दुर्व्यवहार किए गए।

नरमदलीयों की कार्य शैली से निराशा

- यह भी गरमदल के उदय का एक महत्वपूर्ण कारण बना, एक तरफ सरकार इनकी मांगों को महत्व नहीं दे रही थी और दूसरी तरफ ये रणनीति को बदलने को तैयार नहीं थे। 1890 के दशक में अरविंद घोष, विपिन चन्द्र पाल, लाजपत राय इत्यादि नेता खुलकर इनकी आलोचना करने लगे थे और युवाओं पर इनका प्रभाव बढ़ता गया।

- शिक्षा का प्रसार :-

आधुनिक शिक्षा के प्रसार के साथ शिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढ़ी और ये शिक्षित बेरोजगार उग्र राष्ट्रवाद के बेहतरीन प्रचारक सिद्ध हुए।

विचारकों का प्रभाव

19वीं सदी के अन्तिम दशकों में दयानन्द सरस्वती और विवेकानंद के विचारों एवं गतिविधियों ने युवाओं को तेजी से प्रभावित

किया उनमें आत्मविश्वास के भाव को जागृत किया।

अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव :-

1896 में इथियोपिया के द्वारा इटली को पराजित करना, 1905 में जापान के द्वारा रूस को पराजित करना और अत्यंत ही कम समय में जापान के द्वारा औद्योगिकरण जैसे घटनाओं ने राष्ट्रवादी युवाओं को प्रेरित किया और यह धारणा बनने लगी की एक जुट होकर किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

• गरम दलीप नेताओं की गतिविधियाँ

देश के अलग-अलग भागों में 1905 से पूर्व कई गरम दलीप नेता अपने अपने क्षेत्रों में सक्रिय थे जैसे महाराष्ट्र में तिलक, पंजाब में लाजपत राय एवं बंगाल में अरविंद घोष तथा विपिन चन्द्र पाल।

Note :- तिलक-

1893 में गणेश जयंती का आयोजन
1895 में शिवाजी जयंती का आयोजन
1896 में पूणे में विदेशी कपड़ो को जलाना
1896-1897 में महाराष्ट्र में कर न देने का आन्दोलन चलाया
1897 में केसरी में एक लेख के कारण तिलक को 18 महीने की सजा दी गई।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

लोगों ने तिलक को लोकमान्य कहना शुरू किया।

अरविंद घोष -

1894 - न्यू लैम्प फार ओल्ड

1894 में न्यू लैम्प फार ओल्ड नामक लेख में नरम दलीय राजनीति की व्यवस्थित तरीके से समीक्षा की।

लाजपत राय

- कांग्रेस की कार्यशैली से असंतुष्ट होकर 1893-1900 के बीच कांग्रेस की बैठक में भाग नहीं लिया तथा किसानों के मुद्दे को लेकर सक्रिय थे।

बंगाल विभाजन - कर्जन ने राष्ट्रवाद को कमजोर करने के उद्देश्य से 1905 में बंगाल विभाजन का आदेश जारी किया, राष्ट्रवादियों में इस निर्णय के विरुद्ध व्यापक असंतोष दिखा और इसी घटना के पश्चात सरकार का उग्र तरीके से विरोध करने का निर्णय लिया।

Note! - भविष्यजित बंगाल में वर्तमान बांग्लादेश, असम, पश्चिम बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा का क्षेत्र शामिल था इसे दो प्रांतो में विभाजित किया गया।

बांग्लादेश एवं असम को एक प्रांत बनाया गया तथा शेष क्षेत्र को इसरा प्रांत बनाया गया।

विभाजन के सन्दर्भ में सर्वप्रथम 1903 में प्रस्ताव को सार्वजनिक किया गया था।
इस निर्णय का नरमदलीय तरीके से विरोध किया गया।
जुलाई 1905 में विभाजन का आदेश जारी हुआ और अक्टूबर 1905 में इसे लागू किया गया।
अगस्त 1905 में कलकत्ता के टाउन हाल से स्वदेशी एवं बहिष्कार आन्दोलन को प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR